ऑक्सीजन, लेवॉज़िए और क्रांति

पी. बालाराम

अक्टूबर नोबल पुरस्कारों का मौसम होता है। एक सप्ताह की छोटी सी अवधि में स्टॉकहोम से प्रति दिन होने वाली घोषणाएं विज्ञान और वैज्ञानिकों पर ध्यान केंद्रित कर देती हैं। भौतिकी, रसायन और चिकित्सा के नोबल पुरस्कारों की एक साख है। साहित्य तथा शांति के नोबल पुरस्कारों में वह चमक नहीं है। 'शांति' के नोबल तो कई बार विवादास्पद उपलब्धियों वाले राजनीतिज्ञों को दे दिए जाते हैं। अर्थशास्त्र का नोबल पुरस्कार तो बाद में बैंक ऑफ स्वीडन ने शुरू किया था और इसने ज़्यादा प्रतिष्ठा अर्जित नहीं की है। लेकिन विज्ञान के नोबल पुरस्कारों ने पिछली सदी में ज़बर्दस्त वैभव हासिल किया। हैरिएट ज़ुकरमैन के शब्दों में, "शुरुआत में, जब इन पुरस्कारों की ऐसी प्रतिष्ठा नहीं थी, तब नोबल प्रतिष्ठान श्रेष्ठ वैज्ञानिकों को पुरस्कार देकर स्वयं को ही सम्मानित करता था। कुल मिलाकर नोबल पुरस्कारों की प्रतिष्ठा इस बात से बढ़ती गई कि उन वैज्ञानिकों ने इस पुरस्कार को स्वीकार किया जो पहले से ही प्रतिष्ठित थे। प्रतिष्ठा अर्जन की इस प्रक्रिया का अर्थ यह हुआ कि आगे चलकर जब कभी-कभार ये पुरस्कार अपेक्षाकृत कम हैसियत वाले वैज्ञानिकों को मिलते, तो वे मात्र इसी बिनाह पर विश्वव्यापी ख्याति के हकदार हो जाते थे।" आज स्थिति यह है कि नोबल पुरस्कार व्यक्ति को रातों रात 'विज्ञान के अभिजात्य वर्ग' में स्थान दिला देता है। पिछले वर्ष नोबल प्रतिष्ठान ने इन पुरस्कारों की शताब्दी का उत्सव मनाया। स्वीडन की सरकार तो नोबल पुरस्कारों को अपना सबसे कीमती निर्यात मानती है। उसने इस शताब्दी उत्सव को विदेशों में स्वीडिश व्यापार को बढ़ावा देने का मंच बना लिया था।

नोबल शताब्दी के बारे में सोचते हुए संयोगवश एक नाटक *ऑक्सीजन* मेरे हाथ लग गया। इस नाटक के लेखक हमारे ज़माने के दो श्रेष्ठ रसायनज्ञ हैं - कार्ल द्येरासी और रोल्ड हॉफमैन। कार्ल द्येरासी गर्भनिरोधक गोली के निर्माण के पीछे प्रमुख प्रेरणा स्रोत रहे हैं। प्राकृतिक रसायनों के अनुसंधान में उनका योगदान अद्वितीय है। दूसरी ओर रोल्ड हॉफमैन एक सैद्धांतिक रसायनशास्त्री हैं। कुछ रासायनिक क्रियाओं के दौरान परमाण्विक कक्षाओं की समिति बरकरार रहने सम्बंधी शोध के लिए उन्हें 1981 में नोबल सम्मान भी मिल चुका है। द्येरासी और हॉफमैन दोनों ही साहित्यिक प्रतिभा के भी धनी हैं। जहां द्येरासी ने 6 उपन्यास के अलावा कविताएं, नाटक और विज्ञान व नीति सम्बंधी गंभीर लेखन किया है, वहीं हॉफमैन ने तीन कविता संग्रह प्रकाशित किए हैं और लोगों के बीच रसायनशास्त्र को लोकप्रिय करने के प्रयासों में अग्रणी रहे हैं।

अपने छोटे से नाटक *ऑक्सीजन* में द्येरासी और हॉफमैन ने नोबल शताब्दी मनाने का एक अनूठा तरीका सुझाया है। सुझाव यह है कि नोबल समिति 18वीं और 19वीं सदी के लिए रिट्रो-नोबल पुरस्कारों की घोषणा करे। यानी अतीत के नोबल पुरस्कार। मगर इन अतीत- नोबल का फैसला करने में पहला विजेता चुनना असम्भव की हद तक पेचीदा मामला होगा। द्येरासी और हॉफमैन उस उलझन की कल्पना करते हैं जो 2001 की नोबल समिति के सामने पेश होगी। जैसे रसायन का पहला अतीत-नोबल किसे दें।

आधुनिक रसायन की उत्पत्ति पर विचार करते हुए एन्तोन लेवॉज़िए (1743-1794) का नाम बरबस दिमाग में आ जाता है। एन्तोन लेवॉज़िए ने उस क्रांति का सूत्रपात किया था जिसने अन्ततः रसायनशास्त्र को उसका आधुनिक मात्रात्मक रूप प्रदान किया - उसे मात्रात्मक विज्ञान बनाया। लेवॉज़िए की पुस्तक *एलिमेन्ट्री ट्रीटाइज़ इन केमेस्ट्री* फरवरी 1789 में प्रकाशित हुई थी। 14 जुलाई, 1789 के दिन पैरिस के लोग बैस्टिल पर टूट पड़े थे, यह फ्रांसिसी क्रांति की शुरुआत थी। एक माह बाद क्रांति के शुरुआती हफ्तों में ही लेवॉज़िए को पैरिस के लोगों की एक भीड़ ने दबोच कर मौत के घाट उतार ही दिया था। वे तत्कालीन सरकार के